गोकेन गेई की तीन कविताएँ

1.

जुगनू...

क्या मैं जुगनुओं को दोबारा देख पाऊंगी...?
सभी जगहें
इतनी भीड़-भाड़ वाली और दमघोंटू हैं...!
मुझे डर है कि
मैं उन्हें दोबारा कहीं न देख पाऊं...!!

क्या मैं फिर से जुगनुओं को ढूंढ़ पाऊंगी...?
कोहरे से भरे हुए सारे रास्ते बहुत धुंधले हैं...
मुझे डर है कि शायद मैं उन्हें दोबारा न पा सकूं..!
अरे जुगनुओं..! औरों की तरह तुमने भी मुझे
अकेला छोड़ दिया...
भीड़ भरी जगहों पर अकेले...
धुंधली राहों पर अकेले..!

मेरे मित्रों..! वे दिन गए जब आप सब संजोते थे
जगमगाती रोशनियों से भरी मेरी राहें...!!
वे दिन गए
जब आप सब मेरे यहाँ मुझसे मिलने आते थे...!
अब तुममें से कोई मेरी राहें नहीं सजाता..!
अब तुममें से कोई मेरी जगह
मुझसे मिलने नहीं आता...!
मानों तुम सब भी डरे हुए हो....
भीड़-भाड़ वाली जगहें...
धुंध भरे रास्तों से डर लगता है...!

भीड़ भरी जगहों में खो जाने से डर लगता है...
मेरी तरह, मानो तुम भी डरे हुए हो...
मुझे फिर से न पा सकने का डर..!!
मानो तुम भी डर गए हो मेरे दोस्तों..!
डर है कि धुँधले रास्ते तुम्हें मुझ तक शायद न ला
पाए..!!!!

2.

खुद को वक़्त देना है अभी मुझे

जरा ठहरो कुछ देर..! थोड़ा वक्त लगेगा..!!
समय..! कृपया धीरे-धीरे आगे बढ़ो...

मैं तुम्हारे साथ चलना सीख रही हूँ..!
लेकिन इसमें वक्त लगेगा.. ज़्यादा तेज़ मत चलो..!

जरा ठहरों कुछ देर..! थोड़ा वक्त लगेगा..!!
करने को बहुत कुछ बाकी है..
कई अधूरे सपनो को मुझे दफनाना है..!
कई दर्दनाक यादों को मुझे मिट्टी में सुलाना है..!
मैं उन्हें दफनाने के लिए
एक खूबसूरत जगह ढूंढ़ रही हूं..!!
लेकिन इसमें वक्त लगेगा...!!!!

मुझे बहुत से अनकहे शब्द कहने हैं..!
कई अव्यक्त भावनाएँ जाहिर करनी हैं..!
कई अनछुए पल मुझे जीने हैं..!
मुझे बहुत सारे प्यारे पल जुटाने हैं..!!
लेकिन इसमें वक्त लगेगा..
समय, ज़्यादा तेज़ मत चलो..!

जरा ठहरो कुछ देर..! थोड़ा वक्त लगेगा..!!
समय, कृपया धीरे धीरे चलो..!

मुझे अपना प्यार ढूंढ़ना है...!
लेकिन इसमें भी शायद वक्त लगेगा..!

मैं ख़ुद भी इन लम्हों को जीना चाहती हूं
समय, ज़रा रुको...इनको साकार होने में
थोड़ा, तो वक्त लगेगा
इन सबके लिए
खुद को वक़्त देना है अभी मुझे।

3. कोंपल

मैं और कोंपल..!
आप किससे बात करना चाहते हैं..?
"उस आत्मा से जो मुझमें ईश्वरीय प्रेम देखती है.."
उसने जवाब दिया..!!
वह कौन है जिसे आप देखना चाहते हैं..?
मैंने उससे पूछा..!
"जो मुझे आत्मा की निगाहों से देखती है"...!!
उसने जवाब दिया..!!
सबसे सुंदर कौन है..??
"वह जिसे हर जगह
सुंदरता ही सुंदरता दिखाई देती है..."
उसने जवाब दिया और मुस्कुराया..!!
फिर मैं कौन हूँ तुम्हारी नजरों में..? मैंने पूछ लिया..!!
"तुम वही हो जिसकी मैं प्रतीक्षा कर रहा था.."!!!
मेरे ही भीतर उगे कोंपल ने उत्तर दिया..!!!!

***

***(लेखकीय परिचय :** गोकेन गेई, शासकीय महाविद्यालय, गेकू, ज़िला अपर सियांग, अरुणाचल प्रदेश के इतिहास विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। मोबा:8131980788, ई-मेल : geyigoken27@gmail.com)*